मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के प्रधान पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर : डॉ० राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित '**मुक्तिदूत**' खण्डकाव्य क नायक महात्मा गांधी हैं। कवि ने गांधीजी की जिन विशेषताओं का वर्णन किया है, वे संक्षेप में निम्नलिखित हैं—

(1) अलौकिक (लोकोत्तर) पुरुष—कवि ने गांधीजी को असाधारण पुरुष माना है। प्रथम सर्ग में ही गांधीजी को अवतार के रूप में स्वीकार किया गया है। ऐसे महापुरुष पृथ्वी पर अवतार के रूप में प्रकट होते हैं, जो पृथ्वी के दु:खों का हरण करने के लिए आते हैं। जिस कोटि में राम, कृष्ण, ईसा, पैगम्बर, बुद्ध, महावीर आदि आते हैं, उसी कोटि में महात्मा गांधी का नाम भी लिया जाता है।

(2) दलितोद्धारक—गांधीजी ने जीवन भर दलितों, पिछड़ों तथा हरिजनों को गले लगाया। वे बहुत दिनों तक हरिजनों की बस्ती में भी रहे। दलितों, पिछड़ों और निर्धनों का शोषण करनेवाले अंग्रेज-शासकों और पूँजीपतियों का उन्होंने यह कहकर विरोध किया—

सबको हरियाली ही दिखती,
ये सब हैं सावन के अन्धे!
ये पीर पराई क्या जानें,
इनको प्रिय बस अपने धन्धे!!

गांधीजी के जीवन का मुख्य उद्देश्य हरिजनों का उद्धार करना ही था। कवि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

दलितों के उद्धार हेतु ही, तुमने झण्डा किया बुलन्द।
तीस बरस तक रहे जूझते अंग्रेजों से अथक अमन्द॥

(3) मातृभक्त—गांधीजी के जीवन पर उनकी माता के चरित्र की गहरी छाप पड़ी। खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग में उन्होंने अपनी माता को स्वप्न में देखा और उनकी सच्ची शिक्षा को ग्रहण किया। गांधीजी ने उदारता, परोपकार, सत्यता आदि गुणों को अपनी माता से ही सीखा।

(4) राष्ट्रभक्त—गांधीजी महान् राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने जीवन भर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास किया। देश की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अनेक आन्दोलनों को चलाया। उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों के सामने घुटने नहीं टेके। जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड देखकर तो उनका हृदय तड़प उठा।

(5) अडिग तथा निर्भीक—गांधीजी अपने निश्चय पर अटल रहनेवाले थे। वे अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित भारतीय जनता का उद्धार करने के लिए आगे आए। गांधीजी हरिजनों की समस्या से अत्यधिक दु:खी थे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहते हुए उन्होंने कहा—

मैं घृणा द्वेष की यह आँधी, चलने दूँगा न चलाऊँगा।
या तो खुद ही मर जाऊँगा, या इनको मार भगाऊँगा॥

(6) मानवीय गुणों से भरपूर—गांधीजी का चरित्र अनेक गुणों का भण्डार था। उनमें सत्यता, परोपकार, करुणा, अहिंसा, देशभक्ति आदि के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे। वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। वे विश्वबन्धुत्व तथा भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत थे और सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखते थे। गांधीजी सचमुच ही भारत में अलौकिक पुरुष के रूप में अवतरित हुए।

गांधी को 'मुक्तिदूत' कहने की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के प्रतिपाद्य विषय (उद्देश्य) को समझाइए।

उत्तर : प्रस्तुत खण्डकाव्य **'मुक्तिदूत'** में कवि **राजेन्द्र मिश्र** ने स्वतन्त्रता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के व्यक्तित्व, उनके गुणों एवं भारत की स्वतन्त्रता में उनके योगदान को चित्रित किया है। कवि का प्रतिपाद्य महात्मा गांधी के उस अलौकिक व्यक्तित्व का चित्रण है, जिसका उद्देश्य ही सम्पूर्ण मानव-जाति को दासता तथा शोषण से मुक्ति दिलाना रहा है। वस्तुत: कवि का उद्देश्य भी गांधीजी को मुक्तिदूत के रूप में चित्रित करना ही रहा है। इसके अतिरिक्त हरिजन समस्या और भारत के प्राचीन गौरव का चित्रण करना भी 'मुक्तिदूत' का लक्ष्य रहा है।

मुक्तिदूत' शीर्षक का अर्थ और उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य महात्मा गांधी द्वारा भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने के प्रयासों पर प्रकाश डालना रहा है। कवि ने उनके द्वारा समाज के पीड़ित, शोषित, दलित जन को भी शोषण से मुक्ति दिलाने और उन्हें समाज में सम्मानित स्थान दिलाने के पुनीत कार्यों का गौरवगान भी अपने इस खण्डकाव्य में किया है। इस प्रकार कवि ने गांधीजी द्वारा अपने देश व जाति की मुक्ति के कार्यों की प्रशंसा करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है, इसी कृतज्ञता के चलते उन्होंने गांधीजी को 'मुक्तिदूत' की संज्ञा से अभिहित किया है, जो सब प्रकार से उचित ही है। इसीलिए इस खण्डकाव्य का नाम 'मुक्तिदूत' भी औचित्यपूर्ण है। इस शीर्षक में एक सर्वोत्तम शीर्षक के औचित्यपूर्ण, संक्षिप्त, कथावस्तु का वाहक, सारगर्भित आदि सभी गुण सन्निहित हैं; अत: इस काव्य का यह नामकरण सब प्रकार से उपयुक्त और तर्कसंगत है।